IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रेमचन्द की कहानियों की प्रासंगिकता

डॉ अलका शर्मा – सह प्रवक्ता
किशन लाल पब्लिक कॉलेज,
रेवाड़ी 123401(हरियाणा)

प्रेमचन्द सिर्फ एक महान कहानीकार व साहित्यकार ही नहीं थे बल्कि अपने युग के एक जागरूक कलाकार थे। एक जागरुक कलाकार ही अपने युग का वास्तविक प्रतिनिधित्व करता है। देश और काल की स्थितियां एवं प्रवृतियाँ उसकी रचनाओं में दिखाई देती हैं। इस सम्बन्ध में मैक्सिम गोर्की का कथन है कि साहित्यकार सर्वप्रथम अपने युग की घटनाओं और दुर्घटनाओं का प्रत्यक्ष द्दष्ट्रा होता है। इस सम्बन्ध में प्रेमचन्द का विचार है –

"साहित्यकार बहुधा अपने देश, काल से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना असम्भव हो जाता है और उसकी विशाल आत्मा अपने देशबन्धुओं के कष्टों से विकल हो उठती है और इस तीव्र विकलता में वह रो उठता है, पर उसके रुदन में भी व्यापकता होती है। वह स्वदेश का होकर भी सार्वभौम रहता है।"

अपने युग से प्रभावित होते हुए भी प्रेमचन्द जी ने जीवन को उसकी संपूर्णता में अपनाया । उनका कहानी के क्षेत्र में आगमन बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से माना जाता है। उन्होंने उन्नीसवीं सदी के अंत से लेकर बीसवीं सदी के तीसरे दशक तक भारत में फैली हुई समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई । प्रेमचन्द ने जिस समय कहानी लिखना शुरू किया वह छायावाद का समय था। प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी वर्मा की रचनाएँ उस समय चरम पर थी परन्तु प्रेमचन्द जी ने स्वयं को किसी वाद से नहीं जोड़ा अपितु उन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त, छुआछूत, साम्प्रदायिकता, हिन्दू-मुस्लिम एकता, दलितों के प्रति सामाजिक समरसता जैसे ज्वलन्त मुद्दों से अपनी कहानियों को जोड़ा और उन्हें अपनी कहानियों का विषय बनाया।

प्रेमचन्द जी की कहानियों के पात्र सामाजिक व्यवस्थाओं से जूझते हुए पात्र हैं। नियति से उन्हें यातना, दरिद्रता व नाउम्मीदी भले ही मिलती है पर वे हार नहीं मानते और संघर्षरत रहते हैं। प्रेमचन्द जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से तत्कालीन समाज में व्याप्त जिन समस्याओं को अपनी कहानियों का विषय बनाया है वे आज भी हमारे समाज मे परिलक्षित होती है।

प्रेमचन्द की कहानी "अलग्योझा" में संयुक्त परिवार प्रथा की सामाजिक उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया है। कहानी में मुलिया अपने कटु व्यवहार के कारण अपने पति रग्घु का उसके परिवार से अलग्योझा करा देती है । परन्तु रग्घु की मौत के बाद पन्ना व उसके पुत्र, मुलिया व उसके बच्चों की तथा उसकी खेती की देखभाल करते हैं । मुलिया को अपनी करनी पर पछतावा होता है और वह फिर से परिवार के साथ रहने लगती है। कहानी के अन्त में लेखक मुलिया का पन्ना के पुत्र केदार के साथ विवाह करवा कर विभक्त परिवार को पुनः अविभक्त बनाकर अपना संयुक्त परिवार का समर्थक होना सिद्ध कर देता है। इसी प्रकार उनकी कहानी "बड़े घर की बेटी" में बड़े घर की बेटी आनन्दी की उदारता के कारण परिवार का विभाजन होते-होते रह जाता है। प्रेमचन्द जी ने कहानी स्वामिनी में भी इसी प्रकार

संयुक्त परिवार की उपयोगिता को दिखाया है। कहानी की नायिका रामप्यारी के पति का स्वर्गवास हो जाता है। उसका ससुर उसके दुःख को कम करने के लिए उसे गृहस्वामिनी का भार सौंप देता है। तब रामप्यारी स्वयं अनेकों कष्ट झेलते हुए अपने देवर व उसके बच्चों का ध्यान रखती है जिससे उनका परिवार गाँव में आदर्श परिवार हो जाता है। इस प्रकार प्रेमचन्द जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से संयुक्त परिवार के प्रति भारतीयों के मोह को प्रकट किया है।

तत्कालीन समाज में पुत्री का जन्म होना तुच्छ समझा जाता था। "नैराश्य" कहानी में लेखक ने इसी समस्या को दिखाया है। "नैराश्य" के घमंडी लाल त्रिपाठी की पत्नी निरुपमा को केवल लड़कियां ही पैदा होती हैं जिससे घमंडी लाल और उसका सम्पूर्ण परिवार अप्रसन्न रहता है यही कारण है कि जब निरुपमा पांचवीं कन्या को जन्म देती है तो उसे अत्यधिक दुःख होता है और प्रसव गृह में ही उसके हृदय की गति बंद हो जाती है। आज भी ऐसे अनेक परिवार हैं जहां कन्या जन्म के अवसर पर शोक छा जाता। कन्या भ्रूण हत्या भी इसी प्रकार की समस्या से जुड़ी हुई है।

प्रेमचन्द जी के युग में दहेज की समस्या अत्यंत जटिल हो गई थी। दहेज की रकम में दिन - प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही थी जिसके कारण मध्यम वर्गीय परिवार के लिए कन्याओं का विवाह करना अत्यधिक कठिन हो रहा था। कितने ही माता - पिता इसी चिन्ता में घुल - घुल कर असमय अकाल मृत्यु को प्राप्त कर लेते थे। प्रेमचंद जी की कहानी "सज्जनता का दण्ड" में सरदार शिव सिंह की पुत्री का विवाह इसलिए नहीं हो पाता है क्योंकि सरदार शिव सिंह मेरठ के प्रतिष्ठित वकील के लड़के से विवाह में मांगे गए दहेज की पूर्ति नहीं कर पाते हैं। इसी प्रकार कुछ युवक इतने स्वार्थी थे कि वे विदेश जाकर पढ़ाई का खर्च भी लड़की के पिता से चाहते थे। कहानी "कुसुम" में प्रेमचन्द जी ने ऐसे ही एक युवक का चित्र प्रस्तुत किया है। कुसुम का पति जो कि शिक्षित और संपन्न है, उसे पत्नी का स्थान नहीं देता क्योंकि कुसुम के पिता ने विवाह के समय उसे विलायत जाकर पढ़ने का खर्च देने का वायदा किया था परन्तु वह समय पर अपना वायदा पूरा नहीं कर पाए। कुसुम के पिता अन्त में रूपये देने को तैयार हो जाते हैं परन्तु कुसुम यह कह कर "जब तक स्त्री - पुरुष के अधिकार समान न होंगे ऐसे आघात नित्य होते रहेंगे" अपने पिता को रोक देती है और मां के पूछने पर कि रूपये देने में क्या बुराई है वह यह कहती है "यह उसी तरह डाकाजनी है जैसे बदमाश लोग किया करते हैं । किसी आदमी को पकड़ कर ले गए और उसके घर वालों से उसके मुक्ति धन के तौर पर अच्छी रकम ऐंठ ली" अन्त में वह पति से अलग होने का निर्णय लेती है और संबंध विच्छेद कर लेती है। वह स्वतंत्र रह कर संतुष्ट और प्रसन्न रहती है और स्त्री के स्वाभिमान की रक्षा करती है।

इसी प्रकार उनकी कहानी "कायर" में अंतर्जातीय विवाह की समस्या को उठाया है। "कायर" का नायक केशव ब्राह्मण का पुत्र है और नायिका प्रेमा वैश्य की पुत्री। वे दोनों एक ही महाविद्यालय में तथा एक ही वर्ग में पढ़ते हैं। दोनों में प्रेम हो जाता है और वे वैवाहिक बंधन में बंधने का निश्चय करते हैं। केशव अपने पिता के दबाव में आकर प्रेमा से विवाह करना स्वीकार नहीं करता। परन्तु प्रेमा उसके द्वारा की गई इस उपेक्षा को सहन नहीं कर पाती और आत्महत्या कर लेती है। इससे स्पष्ट होता है कि उस समय अंतर्जातीय विवाह का विरोध होता था।

इसी प्रकार प्रेमचन्द जी ने कहानियों में पाश्चात्य प्रभाव के कारण भारतीय सुखी दाम्पत्य जीवन को भी छिन्न - भिन्न होते हुए दिखाया है। प्रेमचंद जी की कहानी "सोहाग का शव" का नायक केशव अध्ययन के लिए इंग्लैंड जाता है तथा विदा होते समय अपनी पत्नी सुभद्रा से अटूट प्रेम का स्वांग भरता है लेकिन इंग्लैंड जाकर पत्नी को पत्र लिखना बंद कर देता है। तब सुभद्रा इंग्लैंड जाती है और पति की पढ़ाई में बाधा नहीं हो इसलिए उससे नहीं मिलती है तथा पड़ोस में रह कर उसे दूर से देख कर संतुष्ट होती रहती है परन्तु सुभद्रा के इंग्लैंड में रहते हुए केशव उर्मिला नामक लड़की से विवाह कर लेता है। सुभद्रा इसे सहन नहीं कर

पाती और अपने सुहाग का विसर्जन कर देती है। इस प्रकार लेखक ने दिखाया है कि किस प्रकार भारतीय सुखी दाम्पत्य जीवन पाश्चात्य प्रभाव के कारण नष्ट हो रहा है।

लेखक ने "बलिदान" नामक कहानी में नौजवान किसान गिरधारी की दुःखद गाथा कही है। जो अपनी ज़मीन को जमींदार के हाथों गिरवी रख देता है और कर्ज़ बढ़ने के साथ - साथ जमीन से हाथ धो बैठता है। निराशा और दुर्भाग्य के कारण वह आंतरिक संघर्ष से जूझता है और अपने सामने कोई विकल्प न देख आत्महत्या कर लेता है।

वस्तुतः प्रेमचन्द जी ने उन्नीसवीं सदी के अन्तिम दशक से लेकर बीसवीं सदी के लगभग तीसरे दशक तक फैली हुई तमाम सामाजिक समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई है। चाहे वह किसान और मज़दूरों की समस्या हो, चाहे नारी मुक्ति की, चाहे दहेज प्रथा की समस्या हो या पाश्चात्य प्रभाव के कारण टूटता दाम्पत्य जीवन हो, प्रेमचन्द जी की ये कहानियां आज भी भारतीय समाज में प्रासंगिक है। आज भी समाज उन्हीं समस्याओं से जूझ रहा है।

"नैराश्य" के घमंडी लाल के समान आज भी समाज में कन्या जन्म को दुःखद मानने वाले कम नहीं हैं। ऐसे परिवारों में कन्या का जन्म बड़े ही दुःख का विषय माना जाता है और इसीलिए अनेक शिक्षित व सभ्य कहे जाने वाले लोग कन्या भ्रूण हत्या जैसा घृणित कार्य करते हैं।

इसी प्रकार संयुक्त परिवार प्रथा महानगरों में खत्म हो चुकी है और उसका स्वरूप एकल परिवारों ने ले लिया है परन्तु समाज में बढ़ती हुई घरेलू हिंसा व हिंसक अपराधों के कारण संयुक्त परिवार की आवश्यकता को फिर से महसूस किया जा रहा है। एकाकी परिवारों में यदि माता पिता दोनों ही नौकरी पेशा हों तो बच्चे इधर उधर भटकते हैं या नौकरों के भरोसे रहते हैं। ऐसे में यदि संयुक्त परिवार होता है तो बच्चों का पालन पोषण ठीक तरीके से होता है और उनको गलत रास्ते पर जाने से रोका जा सकता है। साथ ही साथ घरेलू नौकरों पर भी नियंत्रण रहता है जिससे घरेलू हिंसक घटनाओं पर स्वयं ही रोक लग जाती है।

दहेज प्रथा की समस्या आज भी समाज में विकराल रूप धारण किए खड़ी है। साधन संपन्न माता पिता पुत्री के विवाह पर अपार धन सम्पत्ति खर्च कर देते हैं तथा दहेज में गाड़ी, आभूषण तथा कीमती साजो सामान देते हैं। परन्तु निर्धन परिवारों की शिक्षित व गुण संपन्न लड़कियां दहेज प्रथा के कारण आज भी या तो अविवाहित रहती हैं या ससुराल में जाकर अपने पति व उसके परिवार के अत्याचार सहन करती हैं। आज भी दहेज के लिए स्त्रियों की हत्या की जा रही है।

प्रेमचंद जी की कहानी "कायर" के समान देश के अंदर अंतर्जातीय विवाह को स्वीकार नहीं किया जाता। हरियाणा, पंजाब तथा उत्तर प्रदेश के अनेक क्षेत्रों में "ऑनर किलिंग" जैसी घटनाओं के कारण अनेक युवक - युवतियों को अपने ही परिजनों के हाथों अपने प्राण गंवाने पड़ते हैं। इसी प्रकार "बलिदान" के गिरधारी के समान कर्ज़ के बोझ से दबे किसानों को आत्महत्या करने पर मजबूर होना पड़ता है।

इस प्रकार सामाजिक विमर्शों पर प्रेमचन्द जी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने बीसवीं सदी में थे। उनकी रचनाओं के पात्र आज भी समाज में कहीं न कहीं जिंदा हैं। राष्ट्र आज भी उन्हीं समस्याओं से जूझ रहा है जिन्हें प्रेमचन्द जी ने काफ़ी पहले रेखांकित कर दिया था। चाहे वह नारी की पीड़ा हो, शोषण हो तथा चाहे कर्ज़ की गिरफ्त में आकर आत्महत्या करता हुआ किसान हो। आज फिर से समाज को प्रेमचन्द जी जैसे मानवतावादी लेखकों की आवश्यकता है जो आज भी समाज को उचित रास्ता दिखा सके।

ग्रंथ सूची : →

1 प्रेमचन्द युगीन भारतीय समाज – डॉ इन्द्रमोहन कुमार सिन्हा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना द्वारा प्रकाशित

2 कहानीकार प्रेमचन्द – विक्टर बालिन

3 प्रेमचन्द और उनका युग – डॉ रामबिलास शर्मा

4 प्रेमचन्द की प्रासंगिकता – कृष्ण कुमार यादव

5 मानसरोवर भाग – 3

6 मानसरोवर भाग – 4

7 मानसरोवर भाग – 5